पाठ 1

प्रार्थना

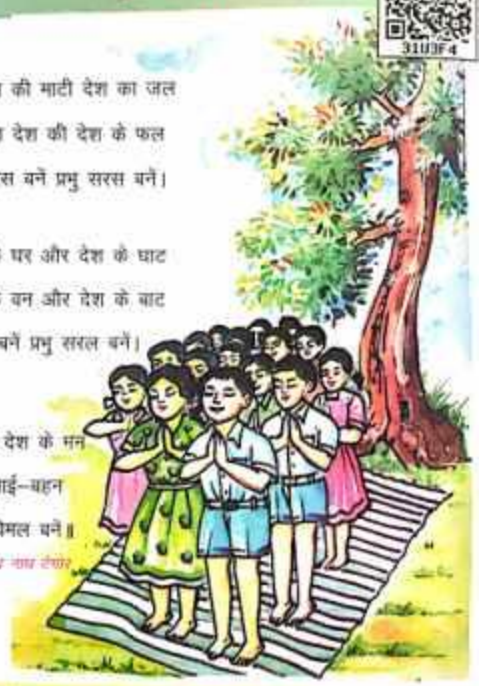

देश की माटी देश का जल
हवा देश की देश के फल
सरस बनें प्रभु सरस बनें।

देश के घर और देश के घाट
देश के वन और देश के बाट
सरल बनें प्रभु सरल बनें।

देश के तन और देश के मन
देश के घर के भाई–बहन
विमल बनें प्रभु विमल बनें॥

– गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर

❋ कक्षा में और प्रार्थना स्थल पर कविता का हाव–भाव के साथ कई बार सस्वर पाठ कराएँ। इस प्रकार की अन्य रचनाएँ भी संकलित कराएँ।